फ्रैडरिक बास्तियात

जीवन परिचय

क्लॉड फ्रेडरिक बास्तियात, ***30 जून 1801*** को जन्मे एक महान फ्रांसीसी उदारवादी विचारक, राजनीतिक विचारक और फ्रांसीसी संसद के सदस्य थे। बास्तियात फ्रांस के **बेयोन** नामक स्थान पर जन्मे थे। जब वे मात्र नौ वर्ष के थे, अनाथ हो गये। सत्रह वर्ष की अवस्था में पैतृक निर्यात के व्यवसाय को संभालने के लिए पढ़ाई छोड़ दी। **अर्थशास्त्री थामस डी लारेन्जो** के अनुसार, निर्यातक के रूप में कार्य करते हुए उन्हें अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव डालने वाले विनियमों का ज्ञान हुआ। पच्चीस वर्ष की आयु में बास्तियात के पितामह का निधन हो गया ।

बास्तियात की प्रतिभा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक था, जो **दर्शन, इतिहास, राजनीति, धर्म, यात्रा, काव्य, राजनीतिक अर्थव्यवस्था** तथा **आत्मकथा-लेखन** तक विस्तृत था, कई भाषाओं के जानकार बास्तियात ने समूचे यूरोप के राजनीतिक अर्थशास्त्रियों का गहराई से अध्ययन किया और उन पर, **एडम स्मिथ, डेस्तुत डी ट्रेसी और चार्ल्स कोमते** का सबसे गहरा प्रभाव रहा। उन्होंने अपनी जिंदगी का बाद का हिस्सा पेरिस में ***'लेस जर्नल डेस इकानॉमिस्तेस'*** *(Le Journal des Economistes)* के संपादक और 1848 में संसद सदस्य के तौर पर गुजारा। ***24 दिसम्बर 1850*** को **तपेदिक** से **रोम** में उनका निधन हुआ था।

कृतियाँ

एक अर्थशास्त्री के रूप में बास्तियात, **1844** में सार्वजनिक रूप से उभरे। बास्तियात की कृतियाँ अर्थशास्त्र व राजनीतिक अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित हैं तथा प्रबल तर्कों व तार्किक बुद्धि पर आधारित हैं।

बास्तियात की रचनाओं में ***इकोनॉमिक सोफिज्म्स*** *(1845)* महत्वपूर्ण है, जो निबन्ध संग्रह है, प्रख्यात व्यंग्य ***"याचिका रोशनी करने वालों की"*** *(Candle makers' Petition)* इसका ही भाग है। ***इकोनॉमिक हार्मोनिज*** में उन्होंने राजनीतिक अर्थशास्त्र पर लिखा है। उनके अन्य कृतियों में ***कोबडेन एंड द लीग*** *(1845)* और ***केपिटल एंड रेंट*** *(1849* ***में प्रकाशित****)* शामिल हैं।

द लॉ *(1850)* निःस्संदेह रूप से बास्तियात की सर्वश्रेष्ठ कृति है, इसमें तार्किक ढंग से यह बताया गया है कि, किस प्रकार विकाश(आर्थिक) व सम्यक कानूनों द्वारा मुक्त समाज का सृजन किया जा सकता है।

विचारधारा

एक **दार्शनिक** के तौर पर, वे आधुनिक काल के कई उदारवादियों के पूर्वजों की तरह थे, उन्होंने व्यक्तिगत आजादी और जवाबदेही पर कई आधारभूत नीतियां तैयार कर दी थीं।एक **राजनीतिज्ञ** के तौर पर, वे सरकार के छोटे आकार के पक्षधर थे।

बास्तियात फ्रांस के अर्थशास्त्रियों की *उदारवादी या लेसी-फेयर (laissez-faire एक ऐसा मत जिसके तहत सरकार को व्यावसायिक गतिविधियों में दखलंदाजी नहीं करनी चाहिए),* जिसमें महान जे.बी. से (J. B. Say) भी शामिल थे, से ताल्लुक रखते थे।

बास्तियात ने **मुक्त व्यापार व सरकारी हस्तक्षेप से रहित अर्थव्यवस्था** के विचार को प्रेरित किया, जिससे संसार के किसी कोने में उत्पादित हो रहे कम लागत व नवीन तकनीक युक्त उत्पादों का लाभ संम्पूर्ण विश्व को मिल सके।

राजनीतिक अर्थशास्त्र पर प्रबंधन में बास्तियात ने ***रोस्यू(Rousseau)*** की सोच के ठीक विपरीत हमें समझाया कि सामाजिक जगत की एक कुदरती सामंजस्य भरी व्यवस्था है।

"याचिका रोशनी करने वालों की" *(Candle makers' Petition)*

संरक्षणवाद पर फ्रेडरिक बास्तियात का प्रख्यात व्यंग्य "याचिका रोशनी करने वालों की" वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में पूर्णतया तर्कसंगत प्रतीत होता है, क्योंकि विकसित व विकासशील दोनों प्रकार की अर्थव्यवस्था वाले देशों की सरकारें घरेलू उद्योगों के बचाव के नाम पर संरक्षणवादी कदम उठा रही हैं।

प्रथम उदाहरण के लिए, विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, मुक्त व्यापार व भूमण्डलीकरण के प्रबल समर्थक अमरीका में आर्थिक राहत पैकेज की राशि उन्हीं कम्पनियों को आवंटित की जा रही है, जिन्होंने आप्रवासी कुशल श्रमिकों, विशेषज्ञों के रोजगार व आउटसोर्सिंग सेवाओं मे कटौती की शर्तों को स्वीकार किया है।

दूसरे उदाहरण के रूप में, विकासशील अर्थव्यवस्था वाले भारत में सरकार नें अनेक आयातित सस्ती वस्तुओं पर एण्टी-डम्पिंग शुल्क लगा रखा है।

उपरोक्त उदाहरणों के विवेचन से यह निष्कर्ष प्राप्त होगा कि सरकारों ने उपभोक्ताओं को सस्ते व नवीन तकनीक वाले उत्पाद अपेक्षा मँहगे व पुरानी तकनीक वाले उत्पाद क्रय करने पर बाध्य कर रखा है।

“याचिका रोशनी करने वालों की” व सरकार की भूमिका

“याचिका रोशनी करने वालों की” में पेश की गई संकल्पना के आधार पर उत्पादक और उपभोक्ता के हितों को संतुलित करने के लिए सरकार को किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने से पूर्व निम्न तथ्यों पर विचार करना चाहिए-

1. किसी भी आर्थिक निर्णय से पूर्व, उपभोक्ताओं पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों का विवेचन किया जाना चाहिए।
2. उत्पादकों पर किसी प्रकार के सीमा शुल्क नहीं लगाये जाने चाहिए क्योंकि ये नवीन तकनीक, सस्ते श्रम, उत्पादन विशेषज्ञता से समाज को प्राप्त होने वाले लाभ को नगण्य कर देते हैं।

वस्तुतः,सरकारों को मुक्त अर्थव्यवस्था अपनानी चाहिए।

चयन व प्रतिस्पर्धा

वस्तुतः, चयन व प्रतिस्पर्धा परस्पर पूरक हैं, जिस अर्थव्यवस्था में उपभोक्ताओं को चयन की स्वतंत्रता होती है, वहाँ चयन के अनेक विकल्प होते हैं व उत्पादकों में परस्पर प्रतिस्पर्धा होती है जो उपभोक्ताओं के लिए लाभकारी स्थिति है।